Veer Narmad
South Gujarat University, Surat

Re-accredited by NAAC with 'A' grade

દક્ષિણાયન
Dakshinayan e-Newsletter

Vol.1, Issue.4-5, 1st Sept-Oct 2018

For Private Circulation Only

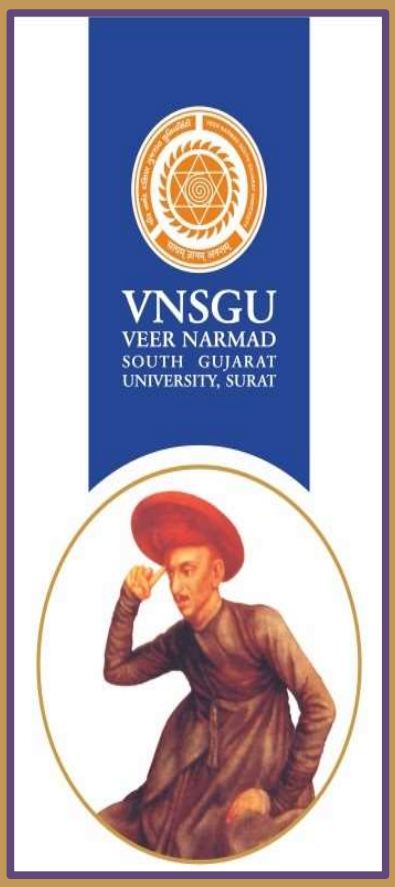

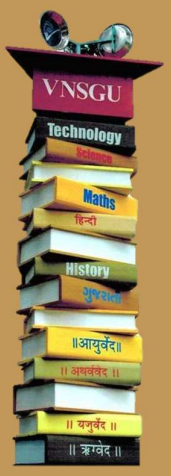

Dr. Shivendra Gupta
Vice Chancellor

આપણી યુનિવર્સિટી
આપણું ગૌરવ

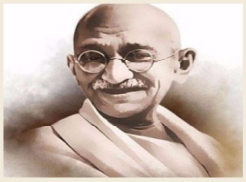

किसी भी कीमत पर स्वतंत्रता का मोल नहीं हो सकता।
वह जीवन है भला जीवित रहने के लिए कया कोई मोल नही चुकायेगा।
–महात्मा गांधी

University Archives (1972-73)

છઠ્ઠા ખેલકૂદ રમતોત્સવ પ્રસંગે પ્રવચન કરતા
પ્રો. હકૂમતરાય દેસાઈ

ખેલકૂદ પ્રવૃત્તિઓ

છઠ્ઠી ખેલકૂદ સ્પર્ધાનાં વ્યક્તિગત મહિલા વિજેતા
કુ. માસુમા મોતીવાલા, કુલપતિ શ્રી. વી. આર. શાહના
હસ્તે અતુલ શીલ્ડ સ્વીકારે છે

નવસારી મુકામે યોજાયેલ ક્રાફ્ટ તાલીમવર્ગમાં પ્રદર્શિત કરવામાં આવેલ નમૂનાઓનું
નિરીક્ષણ કરતા ગુજરાત યુનિવર્સિટીના ભૂતપૂર્વ કુલપતિ શ્રી. લાલભાઈ દેસાઈ

યુનિવર્સિટી ન્યૂઝ

પદવીદાન અહેવાલ

વીર નર્મદ દક્ષિણ ગુજરાત યુનિવર્સિટી, સુરતનો ૪૯મો ખાસ પદવીદાન સમાંરભ શુક્રવાર, તા.૨૪ ઓગષ્ટ,૨૦૧૮ના રોજ સવારે ૧૧-૩૦ કલાકે કન્વેન્શન હોલ ખાતે ડૉ.શિવેન્દ્ર ગુપ્તા,કુલપતિશ્રીના પ્રમુખ સ્થાને યોજાઈ ગયો.જેમાં માં બમ્બલેશ્વરી જનહિતકરી સમિતિના અધ્યક્ષ પદ્મશ્રી શ્રીમતી ફૂલબાસન યાદવે મુખ્ય મહેમાન તરીકે ઉપસ્થિત રહી દીક્ષાંત પ્રવચન આપ્યું હતું.

આ કાર્યક્રમમાં ઉપસ્થિત ડૉ.ભાસ્કર રાવલ કા.કુલસચિવશ્રી ડૉ.ભાસ્કર રાવલ અને પરીક્ષા નિયામક અરવિંદ વી.ધડુક, અને સિન્ડિકેટના આચાર્યશ્રીઓ, વિદ્યાર્થીઓ-વાલીઓ, યુનિવર્સિટી પરિવાર તથા મહેમાનશ્રીઓ ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

૪૯માં પદવીદાન સમાંરભની સ્મરણિકાનું વિમોચન કુલપતિશ્રી શિવેન્દ્ર ગુપ્તા,ઉપકુલપતિશ્રી ડૉ.ભાસ્કર રાવલ મુખ્ય મહેમાનશ્રી પદ્મશ્રી ફૂલબાસન યાદવના હસ્તે કરવામાં આવ્યું હતું.

पद्म श्री फुलबासन यादवः
Convocation Speech

हमे बहुत खुशनसीब समजती हुं. पहेली बार जो अेक अनपढ, न पढना लीखना, कुछ नही अेक मीट्टी गीला लगे वो या वीर नर्मद दक्षिण गुजरात युनिवर्सिटी, गुजरातमें जो मान सन्मान दी अेक तहे दिलसे आप सबका धन्यवाद देना चाहत हुं. पुरे युनिवर्सिटी के जमवु परिवारला और कहेगें, गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः । गुरु साक्षात परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥ आज समस्त गुरु जो भगवान तक पहोंचाते है. गुरु समस्त अेक मंच में बिराजमान है. अति सन्मानित जमवो गुरु है जन के चरण कमल में मैं प्रणाम करती हुं. और विशेष रूप से हमे कुलपतिजी है. जो शायद घर से बहार नीकले हो. लेकीन अैसे गुरुदेव तो कहीं मीले ही नहीं. वारंवार प्रणाम, जो मान सन्मान अेक बेटी नदीमे करवा बहुत बहुत धन्यवाद. छत्तीसगढी में बोलत है और पुरा गर्व है के मैं छत्तीसगढ की बेटी हुं. हर जगा जाती हुं तो छत्तीसगढी मे ही गोढ के आती हुं. लेकीन कोसीस करुं यहां हिन्दी में गोठयां कें, तुता फुता भी हो सके, कब के जहां के खाओ, जहां के पानी पीओ तो गर्व के साथ कह सकु छत्तीसगढी भाषा बहुत बडी है. लेकीन शायद आप मोला बहुत चीज समज में नही रही तो कोसीस करुंगी के अपुन बातला हिन्दी में रखे. बिराजमान अति सन्मानित मंच, जम वुं आज दिक्षांत समारोह में शामील हुअे जमवुं हमारे बेटी बेता मुल्ला, यहां के गुरुजन, मिडीया प्रेस, और समस्त यहां के कर्मचारी भय्या मुल्ला. वास्तव में आज दिन बहुत हम सब पर सौभाग्यवान है. मैं सोची न हुं के जे जगा में जात हुं वो जगह मे मोर हाथ से वो जो बच्चे बढे थे बेटी बेटा मन आगे बढे जो हाथ से नियमुल्ला अेक आर्शिवाद के रूप में मे पढहाथ में दुं और खुशनसीब हुं. मे के आज इतना अच्छा परिवार मोरे मीले है, मा-बाप तो गरीबी मे छीड डी, ढेले की तरह फेक डी गरीबी में, और आज आप सबके मार्गदर्शन आप सबके गुरुजनो के सहयोग से आज में अपन बात रखेत जात हुं. तो में अपुन बातला थोडा सा हिन्दी और छत्तीसगढी चल शकथे.

वो थीक की जिंदगी मे मन में धीन इच्छाशकित और लगन और संयम के पती निस्वार्थ और भरोशा जिंदगी में बहुत आगे बढत है. समाज तो हर बार, कइ बार अैसे है की हमले पीछे पकड के ही खींचे. लेकीन कथीन जो इन्सानला नशा है, वो नशा कइ प्रकार के है. अेक शराब पीने वाले को भी नशा है, जुआ खेलने वालो को भी नशा है, पैसा कमाने वालो को भी नशा है,घर में, गाडी में घुमना नशा है, गाना बजाना सब चीज अेक नशा ही है. लेकीन मन मे और अेक अैसा भी नशा है जिसका नाम हे मानव सेवा, समाज सेवा. दुनिया में बढके मानव सेवा, समाज सेवा से बढके दुनिया मे कोइ अैसा नशा नही है जो जिंदगीभर ना छुट सके. वैसे ही में अेक गांव की महीला हुं, बेटी थी और मन में अेक विश्वास हुआ अपने उपर की अब जिंदगी में कोइ सहारा नही है, संयम को सहारा बनाना पडेगा और आज राजनंद गांव जिल्ले से ,प कि.मी. दूर नक्षल प्रभावीत जिल्ला हमारा राजनंद गांव जलालपोर और नक्षल प्रभावित जिल्ला है, चारों तरफ पहाडी, चारों तरफ जंगल है, वहां मेरा जन्म हुआ. मे ज्ञ साल की उम्र मे थी. हम पांच बहन ओर दो भाइ. सभी भाइ बहन को तो समज नही आ रहा था लेकीन बचपन से ज्ञ साल की उम्रसे मेरी समज में आ रहा था की जिंदगी में कितना उतार चढाव होता है. श्चूंकि में अेक छोटे परिवार अेक गरीब परिवार की बेटी हुं. ज्ञ साल की उम्र में छोंटे से होटल मे कब्बासी धोना मेरा काम बनत है. न में पढ पा रही थी न में लीख पा रही थी. ना दो वश्क्त रोटी नही मील रहा था. मा-बाप र दिन ३ दिन भूखे सुलाते थे. हम लोग सुबह रोते थे की हम को खाना चाहीअे. मा-बाप बोलते थे की नही बेटी सो जाओ शाम को मीलेगा खाना. खाना साम को बनायेगें. फीर साम को रोते थे की हमको भुख लग रहा है हम को खाना चाहीअे. फीर रात को सुलाते थे नही बेटी सुबह देंगें. बीलकुल आप को खाना देंगें. उस समय मां और बाप की आंख में आंसु मेरे लीअे आज पदलक्षी सन्मान तक पहुंचाया है. गरीबी के कारण कइ दिन भूखे प्यासे रहना पडता था. आज जीस जगह में आज खडी हुं ये मेरा ज्ञ साल का सपना था. जब में सभी लोग बच्चे लोग पढने लीखने जाते थे मेरा भी मन लगता था की मैं भी पढुं लीखु. श्चूकि पढने लीखने वाले लोग बहुत पैसा कमाते है. श्चूकि वहां ड्राइवर, कन्डकटर ोटल में चाय पानी पीने के लीये आते थे. उसके जेब मे में पैसा देखती थी तो मेरा मन लगता था की मैं पैसा के यैं लोग बहुत पैसा कामाते है. दोनों टाइम खाते थे. कम से कम में मेरा भाइ बहन को दो वश्क्त की रोटी खीलाउंगी और मैं खुब पढुंगी. पुस्तक लेके पढना लेने के देती थी. लेकीन छत्तीसगढ में कहावत है 'काला अच्छा भेंस बराबर'. वैसे ये बार बार मेरा मन कब्बास धोने में नही लगता था मेरा मन में उद्देश था की मैं पढु, बहुत आगे बढु. मेरे को पढना है, मेरे को खुब पैसा कमाना है. मेरे को बहुत आगे बढना है. और मा-बाप के आंख में जो आंसु है उनको बंध करना है. मेरे को मा-बाप, मेरे मा-बाप रो रहे है तो मेरा ये सपना था बचपन का ज्ञ साल की उम्र में. होटल के अेक झुंपडी में ही होटल था. पीछे मैं बेठ के बच्चेलोग को देखती थी. पीछे मेरी स्कुल था वहा बच्चे लोग बहुत मस्ती करते थे ड्रैस में जाते थे, पुरे खेलते कुदते थे, चील्ला चिल्ला के पढते थे. मेरे मा-बाप भी पढाने लीखाते होते तो मेरे को भी पढाते लीखाते. मा-बाप गरीबी के कारण मेरे को नही पढा पाये. अेक दिन का बात थी अैसी जुलाइ-औगष्ट का बात था बहुत पानी गीर रहा था बच्चे लोग बहुत मस्ती कर कहेथे. मे दोडते दोडते स्कुल गइ और स्कुल में सरको हाथजोड के बोली के मेरे को पढना है सर, मुजे पढना है,

मैं पढना चाहती हुं.`मुजे पढना है. गुरुजी लोग बोलते है की नही. आपको भरती होना पडेगा,आपको पुस्तक लेना पडेगा.अपना ड्रेस लेना पडेगा,तब यहां पढो. अपने मा-बाप को बुलाके लाओ. दोडते हुअे अपने मा-बाप के पास गइ. अपने बाप के हाथ को पकड के रोती हुइ बोली, मेरे को पढना है आज, कुछ भी हो जाय मैं स्कुल जाउंगी. लेकीन मा-बाप मेरे दांत दीये और ये बोले के बेटी हम गरीब है. हमे ये पता नही था की गरीब अैसे होते है. जिसके घर में दो दीन तीन दीन भुखा रहेना पडता है उसीको गरीब बोलते है. ज्ञ साल की उम्र मे समज आ गया के गरीबी का कोइ मा-बाप नहीं होता. दुसरा शब्द बोले के तुं बेटी है, पढना है, नहीं जाना है स्कुल. मेरे मा-बाप दांत दीये और र चिज जो क्रैन की तरह लगा आज जिंदगी महीलाओ को बदलने का ताकात मेरे में आया वो गरीबी से. और अेक बेटी होने के कारण श्चूकि बेटा को श्चुं पढना चाहीअे ? बेटी को श्चुं नहीं पढाना चाहते ? उस दिन में थान ली की, में जो बेटा जो काम नही करेंगे वो काम में बेटी बनके भी अेक बेटा बनके दिखाउंगी ये मेरा सपना था ज्ञ साल का. जैसे दुसरे गांव से नीकल के देखते थे तो उनको लगा की में कहीं मन नही लग रहा था कब्बसीन धोने में. अेक सातवीं कक्षा पढी, कुछ भी करके सब मुल्यवान करके सांतवी कक्षा तक पढे और जैसे वहां गइ तो वहा पीडा न देख पाये, न चप्पल था, ना गंआ. अेक सादी वस्त्र पहन के गइ थी. कुछ नहीं था मेरे पास. जब में वहां राजनंद से क्ष्ध की.मी. शुकल दिक्षावान मेरा गांव है. वहां बीलकुल मेरा घर नहीं था. मेरा पती घेट और बकरी दुसरे और के नोकर काम करते थे. और मे भी जब वहां गइ तो देखती हुं तो वहां अेक बरतन नहीं था खाने के लीये, ना अेक दाना चावल था. चारो तरफ लकडी था और चारो तरफ लकडी में जबाडी लगाडी थी अेक प्लास्टीक की सीरीपन की बुरहान का दरवाजा लगा था. दो साल तक घेट और बकरी चराते थे. मेरे साथ दो साल की बीच मे मेरी दो बेटी और दो बेटा जन्म लीआ. छोटा लडका 1.5 साल का था. वहा बडी लडकी 7.5 साल की थी. अैसी दो बेटी और दो बेटा जन्म लीया और जब में गांव में घेटा और बकरीयां चराके सामके समय ण बजे आती थी तो में तो 7 साल की उम्र मे भूखी रहेती थी. मेरे बच्चे क्षप साल से 7 और ज्ञइप के बच्चे जो छोटे छोटे थे, मेरे बच्चे उठ नहीं पाते थे. खडे नही हो पाते तो और अेक मां के लीअे बहुत दुःख की बात है जो मा अपने बच्चे को दो वश्क्ष की रोती नही खीला शकी. कयुकी वो मां कइ हप्ते के दरम्यान दर्द-दर्द को सह के अपने बच्चे को जन्म देती है. कइ दिन कइ रात जगती है सब भुखे रहेंगे और अपने बच्चों को खीलाती है. स्वयम बिमार रहेती अपने बच्चे का इलाज कराती. कई दिन कइ रात दुःख में सडते हुअे भी अपने बच्चे लोग के साथ हसते हुअे मुस्कराते हुअे बोलती की बेटा मैं खाना खा लीया हुं. तु भी खाले. वो मा-बाप होता है. अब वो स्थिती मेरे साथ था. मैं बोलती थी कभी कभी अपने बच्चे भूखे है, चावल नही है, तो मा के देयु चावल कौमान को दे दुं जिससे मेरे बच्चे लोग सो तो जायेंगे. सब मजाक करनेवाले है, लेकीन मेरे मन में आज शश्क्तिमान दुर्गारूप नवरूप धारण याद आया और मन में आया के अेक लकडी को आसानी से तोडा जा सकता है पर 15-20 लकडीओका गाढा बनाया जाये तो को कीसीमें ताकात नहीं के तोड सके. और वो ताकात आज स्वयंम 2001 की बात थी जब घर से में बाहर नीकली. भुखे मरेंगे तो सभी उसमे आडे होते है, कुछ करना चाहेगे तो सब उसमे आडे होते है. और समाज कोइ बेटी हो चाहे पत्नी हो चाहे अेक बहेन हो, कोइ भी महीलाअे कुछ करना चाहती हो तो.....ये क्युं ? बार बार मेरे मन में लगता था की.....उसमे सभी लोग हसेगें. लालत है क्यूकि ये क्युं नही जानते की बोलते है. नारी नारी मत कहोण नारी नर पे थाळी.....नारी है तो अपना ओफीसका भी काम कर लेती. बेटी है या बहु है चाहे पत्नी है, मा हे, हम लोग का जिन्मेदारी सबसे ज्यादा है, अेक मा से कुछ नही हो सकता. अेक मा खडी रहेगी रोड पे तो अेक ही दिन नही होगा. लेकीन क्ष्ड मा बेठ जायेगी तो अेक ही दिन हो सकता है. सबसे बडी ताकात संगठन, अेकता में है. अब ये मेरे मन में लगा और मे क्ष्क्ष महिलाओ को 2 रूपिया पैसा और 2 मुथ्था चावल हर हप्ता 2 रूपिया जमा करवाती थी और 2 मुथ्था चावल अेकथ्था करवाती थी. उसमे मेरा अेक उद्देश था, हप्ते मे 2 रूपिया और महिने मे 10 रूपिया जमा करवाती. मेरे को ये नही पता था की मेरे नता अधिकारी अैसे अैसे होत है. मैं कभी देखी नही थी. में तो कइ महिना तक बाल मे तेल या कंगी भी नही कर पाती थी. पैरों मे सूपना रहेता था. सादी भी कइ जगह फटा पुराना सील सील के पहनती थी. अब वो स्थिती में मेरे लगा की कुछ करना है. 11 महिलाओ को जब जोडी तो समाज फीर सामने आ गया की ये क्या कर रही हो, गांव की महिला हे, घरकी महिला है, घर तक सीमित रहे. घर से बहार नीकलने का काम महिलाओ का नही है. सबसे पहले बहुत संघर्ष से करना पडा, जब ११ महिला अे इककठठे हुअे तो पुरा गांव विरोध में आ गया हमारा खाना-पिना बंध करवा दीया. महेनत और लगन जीसके उपर कुछ करनेका थान लेते है उसे कुछ नही दीखता चाहे वो मारे या पीटे हो या कुछ भी . कइ दिन मेरे को मार भी पडा नाक-मुहसे खून आता था. अेक ही कपडा पहन के बहार में पडे रहती थी. मे पढी लीखी नही थी आज भी मेरेको दुःख लगता है की मैं अंग्रेजी पढी लीखी नही हुं. बहार जाती हुं तो अंग्रेजी बोलना पडता होता है. कुछ समज में नही आता इस लीये आज भी मुझे वो लगता था इस लीये मेरा मुख्य उद्देश शिक्षा को लेके है, दूसरा उद्देश था स्वच्छता को लेके क्यूंकि अेक महिला शिक्षीत हो जाये तो घर, गांव, समाज शिक्षीत हो जाता है. अधिकारी अधिकारी ही रहेंगे लेकीन रोजगार अेक अैसी चीज है जीसे जर्हा रोजगार करेंगे, हम लखपति , करोडपति बन सकते है और अपना जिदंगी के साथ में पुरे परिवार की जिदंगी सुधार सकते है. रोजगार में मेरा मन लगा, पांचवा उद्देश था समाज में नशा मुक्त क्यूंकि वह सबसे जयादा

पीडित है. मेरा नारा है पढाइ, धराइ, सफाइ. बहुत नामुमकीन काम था गाँव और समाज में ये. जब में घर से बहार निकली, परिवार समाज चिल्लाते थे लेकिन उसमें अेक महान हसती मीले और उन्हे गुरूदेव के रूप मे मानती हुं. वो वहा 3 जनवरी को कलेकटर पद से आये. गाँव के विरोघ के बाद में हमने झगडा नही किया. वर्हा के बच्चे को बालरोज और सश्चर,धी का खीर, पूडी अेवम कढी बनाकर छोटे छोटे बच्चो को खीलाते थे. और स्कुल में जाकर बच्चो की पढाइ को देखते थे. और उनकी वजह से ये काम हमारी महीला भी उसमें मदद कर पाये. उसके बाद पहली बार हमें झंडा फेलाने का मौका 15 अगष्ट को मिला और सबसे बडी गर्व की बात है की मेरे गाँव वालो के मन को जीत पायी.

फिर कलेकटर सर के साथ हम मंच पे खडे, हमार साडी कइ जगह फटा हुआ था, पैर में ही फोडे पडे थे ये गैया (गाय) चरवाह के और हम दुबली पतली थी. हम मंच पे खडे थे लेकीन बोलते है की मां दुर्गा, मां सरस्वती का आशीर्वाद हमारे साथ था. और हमने ध्वजवंदन किया.

उसके बाद हमने कुछ सहयोग दिया, रकतदान केम्प भी स्वयम किया, गांव के लोगो को सहयोग और सेवा किया जिसमें गांव के लोग प्रभावित हुअे ही और उसके साथ आसपास के गांव में भी समूह बनने तैयार हुअे और धीरे धीरे सब लोग जुडने लगें और आज 13,000 से ज्यादा महिला समूह जुड गये है वो 2,00,000 से भी ज्यादा महिलाअे मां बम्बलेश्वरी रीसर्च फाउन्डेशन नाम से जाने जाते है. अैसा कोइ गांव नही है जहां मां बम्बलेश्वरी का समूह नही है. जब समूह बनाने जाती थी तो बहुत रात हों जाती थी पैर मे फोडा आ जाता था देर होने की वजह से में स्वयम साइकल चलाना सीखी, चार-बेटी बेटा की मां होने से साइकल चलाती थी, तो सब लोग हसी उडाते थे, ताना मारते थें, लेकीन मेंरे मन में या की में कुछ करुं और सभी को करके दीखाउ, और धीरे धीरे 20-25 कीलो मीटर तक साइकल चलाते-चलाते गांव में समूह बनाने चली गइ और धीरे धीरे क्लडडड से जयादा महीलाओ को साइकल चलाना सीखा दीया में तो अेक छोटा सा मीट्टी का धेरा ही हुं लेकीन इसमें सहयोग करने वाला इतना बडा संगठन तैयार करनेवाला बहुत सारे मेरा भाइ, बहन है जिनके सर्पोट धीरे धीरे मीलते गये और आज मेरा मेइन काम शिक्षा को लेके था क्यूकी में पढी लीखी नही थी इसलीये. मेरी सादी भी 10 साल में हुआ और रोजगार को आगे बढाते हुअे चाहे मेरा पति हो बेटे या बेटी हो. सभी को छोटी छोटी ट्रेनिग दिया. आज घर में गाय, भेंस, बकरीयां है. पहले मैं झोपडी में थी लेकीन आज पश्चा घर है, घरमें सुविधा है और ये सबकुछ रोजगार से हुआ. में समाजसेवा तो करती हुं लेकीन मेरा उद्देश्य ये था की खाने पीने के लीये भी तो कुछ होना चाहीये और सभी महिलाओ को जोडने के लीये में शरूआत में बकरी पालना चालु किया. जिसमें 200 परिवार के घर में सबके पास बकरी है. अेक फेडरेसन बना हुआ है महिलाओ का और उनके साथ उनके पति भी कार्य कर रहे है, दूसरा चीज है, वर्मीकंपोझ-टका मे फार्म बहार से मंगवाते है इसमें कोइ लागत नही है, मान लो इस में कुछ नही भी होगा तो कोइ घाटा (नुकसान) नही होगा. और 12 लाख से भी ज्यादा जीमीकंथ लगवाये हर अेक महिलाओ को 200 जीमीकंटा लगवाया के लीये बोली. 20 गांव मीलाकर सेकटर बनाया है फिर ब्लोक आता है फिर जिल्ला आता है, जो मेइन महिलाओ का संगठन तैयार करके हम लोग ये काम को शरूआत किया है और में कर्म से ही महिलाओ को जोड कर संगठन बनाया, अैसा कोई गांव नही जिसम संगठन नही है. जीमीकंटा के बाद डेरी है यहां तो अमूलदूध है. लेकीन मेरा सपना है की मीनी अमूल दूध हमारे छत्तीसगढ के राजनंद जिल्ले मे लावुं. और ये सोच कर मै छोटे रूप में मेंने 30 महिला को लेकर ये काम शरू करवाया. 2-2 गाय वो भी कहीं से भी पैसा हमने नही लीये. जो आज बडे रूप में काम हमारा दिख रहा है. महिलाअें स्वयं सरकारी सोसायटी बना लिये है. खाद्य है, गोबर है उसको कम्पोस्टवालो को बेंचते है, जैसे जमीन है जंगल का जितना भी सामान है वो महीलाअे खरीदती है और 4-6 भाव में दूसरी जगह देती है. बकरी को भी दुसरी महिलाये लाकर सरकार को बेचती है. अैसा बहुत सारा डेरी का काम है जो सरकार के रूप में चल रहा है और सभी जगह महिलाअे है. जितना भी काम है जैसे सरकार की योजना है, सरकारी योजना गांव में आया और गांव में जितनी भी समस्या है वो सरकार तक जाती है, मेरे नजर सें नेता बडे नहिं होते, अधिकारी बडे नहि होते, मंच पे बैठने वाला बडे नहि होते, बैठानेवाला सबसे बडे होते है. क्यूकि आप हो, हम है,हम है तो आप हो, और हम आपसे बडे नहि है, हम तो बस बोलने वाले है लेकीन कर्ता धर्ता तो आप हो, आप महान हो, बडी बडी जगह पे नेता है लेकिन बैठाने वाले तो वोही है. आजकल हम अेक दूसरे की चाली चूबली में समय बीता ते है किसीका घर पश्चा बन गया तो बाजुवाले को पडोशीको बहुत दर्द होता है. और भाइ भाइ का दुश्मन नही होता, लेकीन महिलायें महिलाओ का दुश्मन है, और बडे या छोटे का भेद क्यू ? भगवानने सभीको अेक बनाया है लेकीन छूआ -छूत का भेदभाव क्यू ? हम अेक दूसरे को क्यू छोटे बडे समज रहे है ये सोच है वो गलत है. ये सभी चीजो को अेक करने के लीये हम हर साल भंडारा रखते है जिसको हम खीचडी कहते है, वो भंडारा खीचडी माताराणी को चढाते है, हजारो महिलाअें बनाती है, हाजरो महीलाअे उसे परोसती है, और लाखो लोग उसे खाते है अेक महिने तक हम लोंग 'महाकारी' दिवस मनाते है मां दिवस मनाते सभी के लीये मां बाप पैसा इश्चठा करते है, लेकीन जो सही चीज है वो नही करे है और वो है पानी. पानी के बिना जिंदगी अधूरा हकोइ अेक घंटा जिदंगी नही जी सकता. और इसके

लीय हम हर साल 2003 से सोफता गड्ढा का निर्माण करते है. कमर तक गठठा खोदेंगे उसमें इंत दालेंगे और कोयला दालेगें और रेड दालेगे और पप हजार गठठा में हम लोग पानी बचाते है और हम साल, पूरे जिल्ले भर, हम लोग पानी बचाने का काम भी करते है. वृक्षारोपण भी करते है, हवा भी जरूरी है क्यूकि इतना झहरीला हवा है. अेक दिन में 5 लाख तक हम लोग वृक्षारोपण किये. अगले साल यह काम हमारा फिर चालु है की हम हर जगह से कोइ भी बच्चा कुपोषिक ना रहे. गर्भवती मां से लेकर काम हमारा शुरू होना चाहीअे. सारा हमारा काम है, बारी प्रोजेकट है, आदीवासी लोग के लिये हमारा काम चलता है की, जहां बंजर जमीन है, वहां अेक उपजाव जमीन तैयार कर रहे है, मैं अभी राज्य योजना आयोग के सदस्य में हुं. जाती आयोग जिसको कहते है. आपका विभाग में सदस्य है, बहुत सारा है, लेकीन मेरा उद्देश है की जो वोट और नोट से बहुत दुर हुं. कभी वोट और नोट से कभी जिंदगी में मरना पसंद करुंगी लेकीन राजनीती या पैसे के लिअे मैं काम नही करती. मेरा सोच ये है की जिंदगी मे सभी लोग तो जीते है लेकीन मेरा जिंदगी है समाज सेवा के लिअे है. जी रही हुं तो समाज के लिये और मरुगीं तो भी समाज के लिअे और मरने के बाद भी ये शरीर है तो समाज के लिअे. क्यूंकि मेरे बीच में 2 बेटी 2 बेटा ही नही है, ये समाज ही मेरा परिवार है, समाज के लिअे ही मे समर्पित हुं. अपने भरोशे मेरा परिवार है, समाज के लिअे ही जो समर्पित हूं. अपने भरोशे जिंदगी जिअे क्यूकि ये समाज आज देखो की आज हमलोग को महिला पद बनाने का मौका क्यू मिला ? महिलाओं के साथ 3 साल, बेटी के कुकर्म हुआ है, आज कल बेटी के साथ सामुहिक बलात्कार हो रहा है, धिक्कार है ये समाज को और फिर भी ये आज चुप चाप देख रही है. और उसके लिये हर अेक नारी शक्ति को सामने आना होगा. क्यूकि आज हमारा ताकात हम ही रहेंगे आज स्वयं अेक बाप अेक बेटी के साथ कुकर्म कर रहा है. अेक भाइ को भी हम देखने पेपर और टी.वी.के माध्यम से पडोशी को तकलीफ क्यू हो रहा है ? अब उसके लिअे हम स्वयं राजनंद जील्ला, महिला फोज के नाम से तैयार कीये है. हर अेक गांव मे 20 से लेकर 100 महिलायें मिलेंगी सबके हाथमें लकडी रहेता है. सबके हाथ में सीटी रहेगा, टोपी रहेगा. और स्वयं सुरक्षा अपना करती है करती है. कही भी महिलाअे कोइ दारू पी के लडका बता दे भला कोइ गांजा पी के बता दे. या कोइ महिलाओ के साथ छेद-छानी करके बता दे, क्यूकि अेकता में बहुत बडी ताकात है. कोइ पकड मे आ जाये तो उसको फीर बीच मे बुलाके पुरा महिलाअे अेकत्र करती है, बिथाते है, गाँव मे पटेल सरकार को माफी मगवाके चलो मान ले तो ठीक है. हमारा क्या कर लेंगे आप महिलाओ तो सीघा थाना तक पहोंचा देती है. हमारा ड्रेस है गुलाबी उसमें भी अेक बहुत बडा हमारा अेक उद्देश है, गुलाबी फुल जिसका नाम गुलाब है, और वो कांटोभरा जिंदगी महिलाओंका है. तो वैसे हमारा ड्रेस है गुलाबी, पंखडी में गुलाब रहेता है उसके बाद सभी को खुशबु बिखरता है,तो हमारा गुलाबी ड्रेस है. हम सभी को मां भुवनेश्वरी का नाम से प्रिय करते है नमस्कार करते है, क्यूकि मां की शक्ति हमारी मां भुवनेश्वरी फाउन्डेशन काम करती है. तीसरा हमारा उद्देश है की कीतना बेठे है, हमारा नव ताली बजोगा 2 लाख रहे या कितना भी महिलाअे रहे सम्मान लेवु तो क्या मतलब. वो तो मेरे को बहुना आता है. कइ लाख रूपिया मिलता है लेकिन मेरे आंख में आंसु ही आता है. लेकिन खुसनसीब भी हुं की राज्य का सम्मान मेरी महिलाओ को मिला. राज्य के जिल्ले का सम्मान मिला. और भी अैसी महिलाअे है जो विकलांग होते हुअे भी वो महिलायें आगे बढ रही है. और कौमारी है. बोलना तो कइ घंटेतक बोल ते रहेंगे. कभी नही होगा लेकीन शायद मैं अपने बात को यही समाप्त करती हुं. लेकीन अेक थोडासा अेक गीत आप लोगो के बिच में गाना चाहती हुं और बस यही कहुंगी की जिंदगी मे जीतने भी आज डिग्री ले रहा है वो डिग्री ना समजे अेक बहुत बडा सन्मान है आप सब लोग का.इसको माता रानी के कृपा से आप भी अपने लिये तो सभी लोग जीते है लेकीन कुछ समय समाज के लिये, गरीब के लिये जिंदगी जी के देखो. जो सुकुन भरा जिंदगी मिलता है. अपने आप को सुकुन मिलता है कोइ चीज में नही मिलेगा. इस लिअे आप ज्यादा नही क्यूकि हमारा कर्ज मा-बाप, भारत माता, धरती माता, और गुरूदेव के लिये जो जा रहा है, किसी पास वो जगा नही हो सकता. इस लिये अेक गीत में आप लोग के बिच मे समर्पित करना चाहती हुं. पूर्व महिलाओ के तरफसे वो गाना हम सब के लीये प्रेरणा है. मैं चाहुंगी जिन जिन महिला है. दी-दी बहेन है, बेटी है उन लोग भी गुन गुनाअे क्यूकि इन गाना में बहोत ताकात मीलेंगा आप सब को.

बोलो भारत माता की जय.

जीवन में कुछ करना है तो,

जीवन मे कुछ पाना है तो,

मन को मारे मत बेठो,

आगे आगे बढना है तो,

हिम्मत हारे मत बेठो.

जीवन में कुछ पाना है तो, मन को मारे मत बेठो.

आगे आगे बढना है तो, हिम्मत हारे मत बेठो.

चलने वाला मंजील पाता, बेठा पिछे रहेता है,

चलने वाला मंजील पाता, बेठा पिछे रहेता है,

ठहेरा पानी सरने लगता, बहेता निर्मल होता है.

ठहेरा पानी सरने लगता, बहेता निर्मल होता है.

पांउ मिले चलने के खातीर,

पाउ मिले चलने के खातीर,पाउ पछारे मत बेठो,

आगे आगे बढना है तो, हिम्मत हारे मत बेठो.
तेज दौरने वाला खरा रहा, दो पल चल के हार गया.
तेज दौरने वाला खरा रहा, दो पल चल के हार गया.
धीरे धीरे चल कर कछुआ, देखो बाजी मार गया.
धीरे धीरे चल कर कछुआ, देखो बाजी मार गया.
चलो कदम से कदम मिलाये, दुर किनारे मत बेठो.
आगे आगे बढना है तो, हिम्मत हारे मत बेठो.
धरती चलती अंबर चलते, धरती चलती अंबर चलते,
चांद रात भर चलता है.
किरनो का उपहार बातने सूरज रोज निकलता है.
हवा चली तो कहा कभी बिखेरे.
हवा चली तो कहा कभी बिखेरे.
तुम भी प्यारे मत बेठो,
आगे आगे बढना है तो हिम्मत हारे मत बेठो.
जिवन में कुछ करना है तो,
जीवन में कुछ पाना है तो, मन को मारे मत बेठो.
आगे आगे बढना है तो हिम्मत हारे मत बेठो.
आगे आगे बढना है तो हिम्मत हारे मत बेठो.

बोलो भारत माता की जय. भारत माता की जय, छत्तीशगढ महातारे की जय. बहुत बहुत धन्यवाद आप सबका. और कहुंगी की आज यहां से बहुत चिज लेके जात हम. गुरुजी के आशिर्वाद, समस्त गुरूजनो के आशिर्वाद लेके जात हम. अब बस कहुं के अेक बार छत्तीसगढ मे भी वो जगा मे आउं और गाँव में ही रहे के कैसे अेक रोजगार लागुं स्थापीत कर सकते है, अपनी गरीबी दूर कर सकते है. हम आगे बढ सकते है. नोकरी के तलास से अच्छा हे रोजगार से हम आगे बढत. आप सबका बहुत बहुत धन्यवाद.

समस्त युनिवर्सिट जिनको परिवार को धन्यवाद देना चाहुंगी, मेरे प्रेस-मिडीया भाइ मुल्ला धन्यवाद देना चाहु. मेडमजी का धन्यवाद जो कल से आये है हम सबके हमारे वनके खाना-पीना से लेकर सब चीज के व्यवस्था किया है. आप सब को बहुत बहुत धन्यवाद बस येही कहुं की दिन दुगना रात चगुना आगे बठते रहे, तरककी करते रहे, और मान सन्मान बढे. वो आज जितना जब हम दिक्षांत समारोह में हमारे बेटी है, जो भैया है, वो सबका बधाई देना चाहती हु.

जय हिन्द,

जय भारत,

जय छत्तीसगढ.

Hon.Vice Chancellor
Dr Shivendra Gupta

आदरणीय मुख्य महेमान पदमश्री श्रीमती यादवजी, उपकुलपतिश्री डो. भास्करभाई रावल, इ.चा.कुलसचिवश्री धडुकजी, सिन्डिकेट और सेनेट के सदस्यश्री, डीन्स, पोफेसर्स, अध्यापक, स्टुडन्टस, उनके पेरन्टस, और पत्रकार बंधु, और ओल अेडमिनिस्ट्रेटिव स्टाफ और जीनके नाम मैंने नहीं लिए वो सब लोगों से मैं संबोधित हुं। मैं बोलना कुछ और चाहता था और बोलुंगा कुछ और। मां दूर्गा के बारे में पढा था, सुना था देखा नहीं था, आज देखा. बहोत आनंद हुआ की आप यहां आयी। आपने पढे लिखों को बताया की वो कितने बिना पढे लिखे हैं कि पढाइ पूरी नहीं हुइ, शुरू भी नहीं हुइ, आपने तो कई पीअेच.डी. कर ली। हम लोग तो कुछ नहीं कर पायें। मैं आपको इस बात के लिये बधाई देना चाहता हुं कि आप भारत के कोमन अेवम सामान्य व्यकित को उपर लाने की कोशिष कर रहे हैं, वो भी बिना सरकारी मदद के। यै एक बडी बात है, छोटी बात नहीं है। मेरा यह मानना है कि सरकारी संस्था हो, युनिवर्सिटी हो, कोइ और संस्थान हो, सरकारी कार्यालय हो, कोइ भी मिनीस्ट्री हो, सभी का काम समाज को उपर लाना है, समाज की सेवा करना है। जो भी संस्थाअें अैसा काम नहीं कर रही है इनका अस्तित्व समाज के हित में नहीं है।

आज हमारे यहां 5298 बच्चें डिग्रीयां ले रहे है। मुझे यह गर्व होता है यह कहते हुए कि उनमें से 60 पर्सन्ट हमारी बेटियां है, बेटों को हरा दिया उन्होंने। मैं आपको एक बात कहना चाहता हुं कि आप नहीं पढी उससे समाज का नुकशान नहीं हुआ है। आपने यह साबित कर दिया कि हमारी शिक्षामें चाहे वो युनिवर्सिटी की हो या स्कूल की हो, कुछ न कुछ कमीं है कि हम लोग बहुत शिक्षित हो गये। हम लोग पढे लिखे लोग है, समाज में से विशिष्ट वर्ग बन गये है और अब हम मजदूरी नहीं करेंगे। लेकिन फुलबासन यादवजीने साबित किया है कि कीसी भी स्टेज में कहीं भी, बिना सरकारी मदद के, अपनी महेनत से यह समाज, महिलाअें अपनी रक्षा करने में अपना भरणपोषण करने में सक्षम है। दूसरी बात, हिंदी में कहावत है कि 'तेज दांतो वाले भेडिये पर रहम करना, बकरीयों पर जुल्म करे'। अैसा कहतें है कि गुनाह जिससे भी हो वो बुरा है, अक्कलमंद गुनाह करे तब तो उससे भी ज्यादा बुरा है। वो समाज के दबे, पीछडे वर्गो पे ध्यान न देना, जिनके बलबुते पर हम उपर आये है। सबसे बडी बात यह है कि आपने (श्रीमती यादवजी) वो समाज का दुःख Personal Living पे महेसूस

49th Convocation

किया हैं, और उस Living से आपने समाज को जोडा है और आज भी आप रों रही है। वह महिलायें जीनके बारें में पढा लिखा समाज कल्पना भी नहीं कर सकता।

मैं अपने बच्चों को बधाई देता हुं कि आप लोग आज डिग्रीयां ले रहे है लेकिन फूलबासनजी बहनने जो बात कही वो घ्यान में रखीयेगा कि आप समाज से जुडे रहे, समाज सेवा के लिये समय निकाले, समाज के लिये काम करें। हमने भी युनिवर्सिटी में एक फंकशन में Class-4 हालांकी में यह word इस्तेमाल करना नहीं चाहता। हममें से कम पद पर व्यकित को Chief Guest बनाया था और हमें इस बात का गर्व है और हम अैसा आगे भी करते रहेंगे।

मैं अपने बच्चों से यह कहना चाहता हुं कि सावधानी से सोचिये और निश्चय के साथ कार्य कीजिये। जब भी आप यह पास करकें जा रहे हैं कोई काम करने से पहले Carefully सोचियें। सावधानी से सोचिये और निश्चय के साथ कार्य कीजिये। नम्रता से झूकिये। लेकिन दढतासे विरोध कीजिये। जहां विरोध करना है नम्रता रखीये। लेकिन विरोध में कभी कमी नहीं होनी चाहिये। आप से कोइ अपनी गलत बात न मनवा ले वो कीजिये। समाज के प्रति आपका कर्तव्य है, समाज के प्रति जाग्रत रहने की जरूरत है।

'न्यूयोर्क टाइम्स' में मैंने पढा था की एक अमेरिकन President से कहा की 'आप कभी गलतीयां करते हैं, तो उस पर अमरिका पर असर पडता है'? तो उन्होंने कहा कि'America is rich country यहां का राष्ट्रपति अगर छोटी-मोटी गलतियां करता है तो उसका असर बहुत जल्दी दिखाइ नहीं देता, कयूंकि हम उसको Cover कर सकते है, लेकिन मैं तो बधाइ देता हूं भारत के प्रधानमंत्री को, राष्ट्रपति को, बडे नेताओं को अगर वो एक गलती करे तो बहुत सारे लोग भूख के सिकंजे में आ जायेंगे। वो बोले उनका काम इतना कठिन है, मेरा काम इतना कठिन नहीं है'। मैं बार-बार कहता हुं कि यह 135 करोड का देश है, यहां पे हम जो कुछ कर पा रहे हैं, मतलब कि हमारा देश गरीब है, फिर भी हम गरीबों तक पहुंच पा रहे है, उनको मदद कर रहे है और हम करते रहेंगे यह काम को।

हमारी बहन, बेटियां और फूलबासनजी जिस काम को आगे बढाने में मदद कर रही है आप लोग भी उस काम से जुडिये और आप लोग उसमें मददरूप बनीये। वो कोइ पैसा नहीं मांग रही है, वह कह रही है कि आप मानसिक रूप से जुडिये गरोबों के दर्द को देखिये।

मैं एक उर्दू की नजम का Meaning पहले बता देता हुं कि एक आदमी, एक फकीर, गरीब इन्सान के घर वक्त गुजारा, वहां जो औरत थी वो तख्त पे बैठी थी और उसका बच्चा मीट्टी में खेल रहा था और बहार से आवाज आयी,'आम ले लो, आम ले लो'। बच्चा बोलने लगा मां से की 'आम खाना है, आम चाहिये'। मां के पास पैसा नहीं था तो वो रोने लगी और उसकी आंख से आंसु टपकने लगा और वो आंसु टपक रहा था, वो कवि की परिकल्पना थी। वो आप लोग सुनिये तो आप को समज में आयेगा कि..

-डॉ. शिवेन्द्र गुप्ता
कुलपतिश्री

पद्म श्री फुलबासन यादवः परिचय

किसी भी क्षेत्र में साहसिक एवं उल्लेखनीय कार्य करने के लिए सबसे पहले लगन एवं दृढ इच्छाशक्ति की जरूरत होती है उपरोक्त गुणो के अभाव में निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करना कठिन ही नही अपितू असंभव होता है। ऐसे में ध्यान यदि पिछडे, अशिक्षित एवं दुरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में दलितों के उत्थान तथा महिला सशक्तिकरण की और केन्दित करें तो इस दिशा में अच्छे सामर्थ्यवान लोगो की निष्ठा भी डगमगाने लगती है।

इन परिस्थितियों में यदि कोई बहुत कम पढी लिखी महिला दलित एवं महिला सशक्तिकरण की अलख जागाने के लिए सामने आए और तुफान की गती से महिला संगठन खडा करके जाति-पाति के भेदभाव से आगें जाकर चार दिवारी और सामाजिक रूचि में कैद महिलाओं में समाजसेवा,जनजागृति एवं सामाजिक संरचना को ध्वस्त करते हुए आर्थिक समृद्वि का शंखनाद करें तो यह उसकी दुर्धुर्ष जिजीवीषा का ही कारण माना जा सकता है, नारी जाति के सर्वागीण उत्थान तथा महिलाओं में अभूतपूर्व जागृति लाकर उसे पुरूषों के समकक्ष खडा करने में आईकान बन चुकी तथा प्रदेश में इस दिशा में सशक्त हस्ताक्षर के रूप में प्रसिद्वि के शिखर पर पहुंची पद्मश्री फुलबासन यादव के लिए यह किसी चुनौती से कम नही थी कि वह अपनी लोकप्रियता को बनाए रखनें के लिए सामाजिक संदर्भो में विद्रुपताओं को लगातार समाप्त करते हुऐ आर्थिक समृद्वि के अलावा ऊंच-नीच के भेदभाव की प्रगति तथा समृद्वि की नई परिभाषा लिखे। यह हर्ष की बात है कि फुलबासन यादव ने इन चुनौतियों का डटकर सामना किया, निराशा को तमाम मुश्किलो के बिच अपने आसपास भटकने नही दिया और दलित समूहों के सामाजिक नवोन्मेष कि नई इबारत लिखते हुए उन्हे समाज सेवा के क्षेत्र में लाकर ऐसी अमित छाप छोडी कि दलित समुदाय के महिला एवं पुरूष न केवल उनके अनुगामी बन कर सामने आ रहें है। अपितू सामाजिक प्रगति की मूल धारा से खुद को जोड रहे है।

ज्ञातव्य है छत्तीसगढ राज्य में पिछडे वर्ग के अलावा दलित समूदाय के पुरूष एवं महिलाओं की एक बडी संख्या न केवल शहर में अपितू गांव में निवास करती है। इनमें ज्यादातर कृषक-मजदुर, नाई, धोबी, लोहार, से लेकर छोटे-मोटे व्यावसाय करने वाले वर्ग के लोग है। इनमें सतनाम समाज के अलावा बया महार, महार समाज तथा समकक्ष बौधिष्ट समाज के लोग शामिल है इन दोंनों तीनो वर्ग के लोग मध्यम वर्ग समाज के लोगों से पीडित प्रताडित होकर छुआ-छुत, खान-पान में सहभागिता से भी वंचित होते रहे है। लेकि फुलबासन यादव द्वारा छेडे गयें अभियान से दलितो की स्वीकार्यता एवं सामाजिक सहभागिता बढी

है। मानव-मानव एक समान तथा सभी के शरीर में है खुन भी एक जैसा जैसे पवित्र एवं मानवीय भावनाओं का उद्घोष करते हुए फुलबासन यादवने इन दलित, पीडित एवं उपेक्षित समाज के महिलाओ को महिला उत्थान एवं सशक्तिकरण अभियान से जोडकर उन्हें न केवल सामाजिक समानता का अधिकार दिलाया अपितू उनके मन की कुठित भावनाओ को ध्वस्त करके उनमें नई शक्ति एवं उत्साह का संचार किया। वर्तमान में स्थिति यह है कि चार दशक पहले की दलित समाज में व्याप्त ऊंच-नींच, छुआ-छुत की भावनाएं पूर्णतः समाप्त हो गई है, न केवल उतना ही अपितू परंपरागत कृषि एवं मजदुरी की आर्थिक विषमताओ से उबार कर फुलबासन यादव ने उनके लिए अल्प बचत के अलावा लघु एवं कुटीर उधोग का एक बडा क्षेत्र उनके लिए खोल दिया है, अल्पबचत खांते में करोडों रूपयें समूहो में जमा कर लिया है परिणाम स्वरूप महिलाए बाजार ठेका, सिलाई-कढाई, मत्स्य पालन, ईट एवं कवेलू व्यवसाय, रंगसाज, खिलौना निर्माण, बांस शिल्प, वस्त्र निर्माण, उन्नत कृषि, टेन्ट व्यवसाय एवं इसी तरह के अन्य कम लागत के व्यवसायों से खुद को जोडकर अपनी अर्थिक समृद्वि ही नींव को दिन-प्रतिदिन मजबुत बन रही है, कहना न होगा कि फुलबासन यादव ने बाल-विवाह को रोकने से लेकर निर्धन कन्याओं के हाथ पीले करने से लेकर पेयजल, स्त्रोंतों की सफाई, पानी का दुरूपयोंग रोकने तथा शराबबंदी को बावा देने के लिए राजनांदगांव जिले में जो अलख लगाई है उसके परिणामस्वरूप छत्तीसगढ सरकारने शराबबंदी को अपने नीति एवं निर्णय में शामिल किया है, इससे सामाजिक बर्बादी का क्रम रूका है और लोग खुशहाली एवं समृद्वि की ओर बढ रहे है।

फुलबासन यादव ने सामाजिक बुराईयों को लक्षित करते हुए हर ऐसी बुराईयों के खिलाफ अभियान छेडकर उसे नेस्तनाबुद करने में सफलता हासिल की है उन्होने एक बडा अभियान सोख्ता गड्ो के निर्माण को लेकर चलाया जिसके कारण गांव-गांव में सोख्ता गड्ें बनाए गये। इससे जल स्तर को बनाऐं रखने में मदद मिली एवं भुमिगत जल स्त्रोत संरक्षित, सुरक्षित एवं समृद्व हुआ।

कुल मिलाकर कहें तो ऐसा नही है कि महिला जागृति एवं महिलाओं के सशक्तिकरण को लेकर पद्मश्री फुलबासन यादव ने सीमित क्षेत्र में एक तरफा कार्य किया है, उनके कार्य क्षेत्र में सम्पूर्ण दबे कुचले, शोषित पीडित दलित एवं गरीब महिलाए रही है।

सुप्रसिद्व साहित्यकार स्व. दुष्यंत कुमार की गजल की पंक्ति है - कैसे आकाश में सुराख नही हो सकता, एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो. यह एक प्रतीकात्मक कथन है जिसका मतलब है कि पुरी तबियत

एवं निष्ठा से किया गया कार्य उसे निश्चय ही सफलता के मुकाम तक पहुंचा देता है। इसमें असफलता के लिए कोइ गुंजाइश नही होती।

गरीबी में पली बढी ओर गाय चराते हुअे गोबर बीनकर तथा बकरी पालकर अपने धर परिवार का गुजारा करने वाली फुलबासन यादव संवेदनशील थी, कुछ करने का जज्बा था। अल्प शिक्षित होने के बावजूद उसमें इतनी समज आ गई थी कि उसे जमकर कार्य करना है। निर्धन परिवार से होने के कारण उसे गरीबी की तकलीफ एवं गरीब परिवार के महिलाओं की दुर्दशा की बखूबी जानकारी थी। बस उसने नारी सशक्तीकरण की दिशा में तबियत से एक पत्थर उछालने का कार्य किया और इस फुलबासन यादव ने आकाश में इतना बडा छेद कर दिया की सारा देश इस सुगंध से आप्लावित होने लगा है। फुलबासन यादव ने इस कथन को साबित कर दिया है कि मैं तो अकेला ही चला था मंजिले जानिब लोग जुडते गये कारवां बनता गया, इस तरह रास्ता आसान होता रहा। इस लम्बे सफर में उसने लक्ष्य एवं नये प्रतिमान की और अपना घ्यान केन्द्रीत रखा और नए कीर्तिमान बनते चले गये।

फुलबासन बाई यादव ने यह साबित कर दिया कि प्रतिभा अमीर घराने की मोहताज नही होती अपितू प्रतिभा कसौटी की मोहताज होती है और यह गरीबी में ही श्रमसाघ्य होती है और बडी खुबसुरत से फुलती-फलती है। समय पर यदि उसे खाद-पानी अर्थात प्रोत्साहन एवं मंच मिल जाय तो उसकी खूशबू फैलने में देर नही लगती है। तत्कालीन कलेकटर दिनेश श्रीवास्तव ने फुलबासन बाई की प्रतिभा को बखूबी पहचाना और उसे निखरने के लिए अवसर प्रदान किया। इस अवसर एवं प्रोत्साहन ने फुलबासन बाई की संवेदना को और जागृत कर दिया और उसने एक अंतहीन उडान भरते हुए क्षितिज के कोने तक पहुचाने का सिलसिला जारी रखा। मंजिल दर मंजिल उसकी उडान जारी है और इसमें थकान अथवा विश्राम के लिये कोइ जगह, कोइ स्थान नही है।

वर्तमान में फुलबासन बाई सामाजिक क्षेत्र मे लगातार कार्य करते हुऐ महिला सशक्तिकरण की दिशा मॉडल बन चूकी है फिर भी उसकी उडान जारी है।

फुलबासन के घर परिवार की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। ऐसे में विषम परिस्थितियों, सामाजिक बंधन एवं रूढियों से बंधें होने के कारण समाज सेवा, खासकर नारी जागृति एवं महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में कार्य करना कपोल कल्पना जैसी बात थी। लेकिन एक महान चिंतक के कथन का स्मरण करें तो मनुष्य के भीतर कार्य करने की अद्भूत क्षमता मौजूद है और वह आकाश के तारें तोडकर लाने का असंभव कार्य भी कर सकता है इसी क्षमता का स्मरण करते हुऐं श्रीमती फुलबासन यादव ने तमाम परिस्थितियों के बीच नारी जागृति एवं महिला सशक्तिकरण की दिशा में मजबूती से कदम आगे बढाया।

उस समय गांव में अनुसूचित जाति, जनजाति, की महिलाओं को लेकर अन्य जाति समाज के लोगो के बीच छुआछुत जैसी भावना जड जमाए हुए थी। अतः ग्रामीणजनों के बीच उनके घर परिवारों में इसका विरोध होने लगा। लेकिन इन सबकी परवाह न करतें हुऐ महिलाओ को समूहो से जोडने का कार्य जारी रखा। उन्होनें अशिक्षित महिलाओ को उनके घर के चार दिवारी से बाहर निकालकर शासन द्वारा महिला समूह गठित करने और इससे होने वाले लाभ से अवगत कराया। उन्होने महिलाओ के बीच सामाजिक जागृति की मिशाल जलाई। प्रारंभ में गांव की साफ-सफाई, सोख्ता गड्ढे का निर्माण, बालभोज, गर्भवती महिलाओं की सुरक्षा, उन्हे आयरन एवं विटामिन की गोली देने, स्वास्थय परिक्षण कराने, स्वास्थय शिविर लगाने तथा सिलाई काई सेन्टर का संचालन करने के अलावा पहली बार महिलाओं को रक्तदान के लिये प्रेरित किया। परिणाम अत्यंत आशाजनक रहा तथा पहली बार आश्चर्यजनक ढंग से महिलाओं ने 12 बोतल रक्तदान किया।

वर्ष 2001-02 में महिलाओ को आत्मनिर्भर बनाने तथा दुर-दुर तक उन्हे पैदल आवागमन के तकलीफ से मुक्ति दिलाने के लिये प्रेरक बनकर श्रीमती फुलबासन यादव न केवल स्वयं सायकल चलाना सिखा अपितु लगभग हजारो महिलाओ को गांव-गांव जाकर सायकल चलाने प्रेरित किया इससे प्रेरित होकर नाबार्ड ने 2000 महिलाओ को 500 रूपये प्रति सायकल अनुदान दिया।

મુલાકાત

સુરત કલેકટરશ્રી ધવલ પટેલએ યુનિવર્સિટી ગ્રંથાલયની ૨૯/૮/૨૦૧૮ના રોજ મુલાકાત લીધી હતી. કલેકટરશ્રીએ મુલાકાત દરમ્યાન સંસ્કૃત સાહિત્ય,યોગશાસ્ત્ર,ફિલોસોફી વ્યાકરણ તેમજ ધર્મગ્રંથોની વાંચનસામગ્રી પ્રત્યે રસ દાખવીને સરાહના કરી હતી.

યુનિવર્સિટીના એકવેટિક બાયોલોજીના વિદ્યાર્થીઓએ તા.૩૦/૮/૨૦૧૮ના રોજ નર્મદ/સ્મૃતિ ભવનની મુલાકાત લીધી હતી.મુલાકાત દરમ્યાન વિદ્યાર્થીઓએ નર્મદ જીવનની ઝાંખીનું દર્શન કરીને સંતોષ માન્યો હતો. જેમના નામ સાથે જોડાયેલી છે તેવી આ યુનિવર્સિટીના વિદ્યાર્થીઓ કવિ નર્મદ વિષે જાણે તે માટેનો મુલાકાતનો મુખ્ય હેતુ હતો.

યુનિવર્સિટીના ગુજરાતી વિભાગના પ્રા.પન્ના ત્રિવેદી અને વિદ્યાર્થીઓને ગ્રંથાલય ઓરીએન્ટેશનના ભાગ રૂપે તા.૯/૮/૨૦૧૮ના રોજ ગ્રંથાલયની મુલાકાત લઈ ગ્રંથાલયની વાંચનસામગ્રી અને સેવાઓની માહિતી મેળવી હતી.

આરોગ્ય

યુનિવર્સિટીના આરોગ્ય કેન્દ્ર દ્વારા તા.૨૯/૮/૨૦૧૮ના રોજ યોજાયેલ 'હેલ્થ ચેક અપ' કાર્યક્રમમાં યુનિવર્સિટીના એકવેટિક બાયોલોજી વિભાગના વિદ્યાર્થી કર્મચારીઓએ પોતાના આરોગ્યની તપાસ કરાવી હતી.

લાયબ્રેરિયન્સ ડે

લાયબ્રેરી સાયન્સના જનક પદ્મશ્રી ડૉ.એસ.આર.રંગનાથના જન્મદિવસ (૧૨ મી ઓગષ્ટ)ને "લાયબ્રેરિયન્સ ડે" તરીકે ઉજવાય છે. જે નિમિતે નવયુગ સાયન્સ કોલેજ કેમ્પસના, વિદ્યાર્થીઓ આચાર્યશ્રી ડૉ.અશ્વિનભાઈ પટેલ તથા લાયબ્રેરીયનશ્રી પી.બી.પટેલ દ્વારા પર્યાવરણની જાળવણીના ભાગ રૂપે વૃક્ષારોપણ કરીને અનોખી રીતે આ દિવસની ઉજવણી કરવામાં આવી હતી.

કોલેજ ન્યૂઝ

સ્પર્ધા

(૧) એ. વી. પટેલ કોમર્સ કોલેજ બીલીમોરા ખાતે ગુજરાત રાજ્યની સપ્તધારા પ્રવૃતિની "ગીતસંગીત ધારા" હેઠળ પ્રાર્થના સ્પર્ધાનો કાર્યક્રમ યોજાયો હતો . કાર્યક્રમની શરૂઆત પ્રાર્થનાથી થઈ હતી. આ સ્પર્ધામાં ખૂબ ઉત્સાહપૂર્વક સ્પર્ધકો એ ભાગ લીધો હતો.જેમાં હિન્દી તથા ગુજરાતી પ્રાર્થના સ્પર્ધકો એ રજૂ કરી હતી . જેમાં પ્રથમ ક્રમે રાવલ રિયા આર .,એસ.વાય.બીકોમ , બીજાક્રમે સોની વિશ્વા સી.,ટી.વાય બીકોમ (અંગ્રેજી માધ્યમ) અને તૃતીય ક્રમે રાજપુરોહીત પ્રિયંકા બી.એસ.વાય. બીકોમ(અંગ્રેજી માધ્યમ) રહ્યા હતા.સ્પર્ધાના નિર્ણાયક તરીકે પ્રા.યોગેશભાઈ દેસાઇ અને પ્રા.નરેન્દ્રભાઈ સોલંકીએ સેવા આપી હતી. કોલેજના આચાર્યશ્રી વર્ષાબેન ટી. રાણાના માર્ગદર્શન હેઠળ પ્રા.યોગીનીબેન મિસ્ત્રીએ તથા કોલેજના પરિવારે કાર્યક્રમને સફળ બનાવવા વિદ્યાર્થીઓની સાથે રહી માર્ગદર્શન અને સહકાર આપ્યો હતો.

(૨)એ.વી.પટેલ કોમર્સ કોલેજમાં ગુજરાત રાજયની સપ્તધારા પ્રવૃતિ હેઠળ "રંગકલા કૌશલ્યધારા" હેઠળ "મહેંદી સ્પર્ધા" સ્પર્ધાનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. જેમાં વિદ્યાર્થીઓએ ઉત્સાહભેર ભાગ લીધો હતો. મહેંદી સ્પર્ધામાં પ્રથમ ક્રમે કુસ્વાહ મનીષા આર., એસ.વાય.બીકોમ વિજેતા રહ્યા હતા. આ સ્પર્ધામાં નિર્ણાયક તરીકે પ્રા.સોનલબેન એસ.વસાવા તથા પ્રા.ધાર્મિષ્ઠાબેન જે.ઢીમ્મરે સેવા આપી હતી. સમગ્ર કાર્યક્રમનું આયોજન અને સંચાલન પ્રા.જિગીષાબેન એચ.પટેલે ઈ.ચા આચાર્યાશ્રી વર્ષાબેન ટી.રાણાના માર્ગદર્શન હેઠળ કર્યું હતું. કોલેજના શૈક્ષણિક તથા બિનશૈક્ષણિક સ્ટાફ તથા .વિદ્યાર્થીઓનો સુંદર સહકાર મળ્યો હતો

સાર્વજનિક એજ્યુકેશન સોસાયટી સંચાલિત, સર કે.પી કોલેજ ઓફ કોમર્સ.સુરત તા.૧૩-૧૦-૨૦૧૮ ના રોજ ઇન્ટર કોલેજ મહેંદી સ્પર્ધાનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. સ્પર્ધાની શરૂઆત પ્રભુ વંદનાથી કરવામાં આવી હતી તથા આચાર્યા ડૉ.માર્ટિનાબહેન દ્વારા દીપ પ્રગટાવી સ્પર્ધાને ખુલ્લી મુકી હતી. આચાર્યા શ્રીમતી ડૉ.માર્ટિના આર.નરોન્હાબહેનના શુભઆશિષથી યોજાયેલ આ સ્પર્ધામાં વિવિધ કોલેજની ૩૫૦ વિદ્યાર્થીની બહેનોએ પોતાની ક્રિએટીવીટી તથા ઇમેજિનેશનથી કળાનું દર્શન કરાવ્યું હતું.

શ્રાવણ મહિનામાં શ્રી વરૂણ દેવતાને રીઝવવા માટે વિદ્યાર્થીની બહેનોએ મહેંદીના રુપમાં પ્રાર્થના કરી હતી જેથી ખુબ સારો વરસાદ પડે. વિદ્યાર્થીની બહેનોએ ખૂબ મોટા પ્રમાણમાં ભાગ લઈ સ્પર્ધાને રોમાંચક અને સફળ બનાવી હતી.આ મહેંદી સ્પર્ધાના ત્રણ પ્રકારો રાખવામાં આવ્યા હતા. (૧) ટ્રેડિશનલ મહેંદી (૨) અરેબિક મહેંદી (૩)જવેલરી મહેંદી સ્પર્ધા. આ ત્રણેય સ્પર્ધામાં સ્પર્ધકોએ મંત્રમુગ્ધ કરી દેતી કલાત્મક મહેંદીનું દર્શન કરાવ્યું હતું. નિર્ણાયકોને નિર્ણય લેવામાં ભારે મહેનત કરાવી હતી.આ સ્પર્ધાના નિર્ણાયકો તરીકે સર કે.પી.કોલેજ ઓંફ કોમર્સના શ્રીમતી નિમિષા પારેખ તથા શ્રીમતી ચેતશ્રી જોષીએ સેવા આપી હતી.આ સ્પર્ધાને સફળ બનાવવા માટે સમગ્ર કોલેજ પરિવાર અથાગ મહેનત કરી હતી. આ સ્પર્ધાના વિજેતાઓને આચાર્યા શ્રીમતી ડૉ.માર્ટિના આર.નરોન્હા તથા નિર્ણાયકના શુભહસ્તે વિજેતાશ્રીઓને ખૂબ જ આકર્ષક ટ્રોફી તથા સર્ટીફિકેટનું વિતરણ કરીને સૌ સ્પર્ધકોનું અભિવાદન કર્યું હતું. અને સૌ સ્પર્ધકોનો આભાર માન્યો હતો.આ સ્પર્ધાના પરિણામો નીચે મુજબ છે.

(૧) ઇન્ટર કોલેજ ટ્રેડિશનલ મહેદી સ્પર્ધા
પ્રથમ વિજેતા - કુ.ઝરણા એ. તલાવીયા - જે.બી.ધરુકાવાલા કોલેજ,સુરત.
દ્વિતીય વિજેતા – કુ.બીનલ જે.ઓઝા – સી.ડી.બરફીવાલા કોલેજ,સુરત.
તૃતીય વિજેતા – કુ.આરઝુ ઓસ્લાનીયા – એસ.વી.પટેલ
આશ્વાસન ઇનામ- કુ.મહેરીનબાનું દરજી- સર.કે.પી.કોલેજ ઓફ કોમર્સ,સુરત.
આશ્વાસન ઇનામ-કુ.દ્રષ્ટી એસ.વેલાછાવાલા- ડી.આર.બી.કોમર્સ કોલેજ,સુરત.

(૨) ઇન્ટર કોલેજ અરેબીક મહેદી સ્પર્ધા
પ્રથમ વિજેતા –કુ.તસ્નીમ આઈ.ખડકી - સર.કે.પી.કોલેજ ઓફ કોમર્સ
દ્વિતીય વિજેતા – કુ.અમીના એમ.આરીવાલા – વનિતા વિશ્રામ કોલેજ
તૃતીય વિજેતા – કુ.વૈષ્ણવી જે.મિસ્ત્રી – સર.કે.પી.કોલેજ ઓફ કોમર્સ,સુરત.
આશ્વાસન ઇનામ- કુ.પ્રિયા પી.પટેલ- નવયુગ કોલેજ
આશ્વાસન ઇનામ- કુ.આફિન શેખ – એમ.કે.કોલેજ ભરૂચ

(3) ઇન્ટર કોલેજ જ્વેલરી મહેંદી સ્પર્ધા
પ્રથમ વિજેતા –કુ.ભાર્ગવી કે.દિલખુશ - સર.કે.પી.કોલેજ ઓફ કોમર્સ,સુરત.
દ્વિતીય વિજેતા – કુ.બંસરી કે.બાબરીયા – સર.કે.પી.કોલેજ ઓફ કોમર્સ,સુરત.
તૃતીય વિજેતા – કુ.ડિન્કી વી.જૈન – અંબાબા કોલેજ,સુરત.
આશ્વાસન ઇનામ- કુ.નેન્સી.પી.ધુમ્મર- નવયુગ સાયન્સ કોલેજ ,સુરત.
આશ્વાસન ઇનામ- કુ.હીના એફ.કનેરિયા – એસ.બી.ગાર્ડા કોલેજ ,નવસારી.

સર.કે.પી.કોલેજ ઓફ કોમર્સ,સુરતના વિજેતાઓ
(૧) ટ્રેડીશનલ મહેંદી સ્પર્ધા
પ્રથમ વિજેતા –કુ.વિધિ જે.સુરતી – ટી.વાય.બી.કોમ
દ્વિતીય વિજેતા – કુ.રિયા એમ.ભાટેલા – ટી.વાય.બી.કોમ.
કુ.રૂચી.વી.પટેલ –એફ.વાય.બી.કોમ.
તૃતીય વિજેતા – કુ.દીક્ષાલી કે.પટેલ – ટી.વાય.બી.કોમ
કુ.મહેરીન દરજી- એસ.વાય.બી.કોમ
આશ્વાસન ઇનામ- કુ.નેહા વી.ચકવાલા- ટી.વાય.બી.કોમ.
કુ.વર્ષા.ડી.વાય – એસ.વાય.બી.કોમ.
કુ.હિનલ બી.જરીવાલા- ટી.વાય.બી.કોમ

(૨) અરેબીક મહેંદી સ્પર્ધા
પ્રથમ વિજેતા- કુ.તસ્નીમ આઈ.ખડકી-એમ.કોમ.
દ્વિતીય વિજેતા- કુ.વૈષ્ણવી જે.મિસ્ત્રી,
કુ.પ્રિયંકા બાબરીયા- એમ.કોમ.પાર્ટ-૨
તૃતીય વિજેતા-કુ.ખડીજા શેખ – એફ.વાય.બી.કોમ.ઓનર્સ
કુ.અલફીયા શેખ – એસ.વાય.બી.કોમ.
આશ્વાસન ઇનામ- કુ.હમીદુન્નીશા પઠાણ- ટી.વાય.બી.કોમ

(૩) જ્વેલરી મહેંદી સ્પર્ધા
પ્રથમ વિજેતા- કુ.ભાર્ગવી દિલખુશ – એમ.કોમ.ઓનર્સ
દ્વિતીય વિજેતા- કુ.બંસરી બાબરીયા - એમ.કોમ.ઓનર્સ
તૃતીય વિજેતા- કુ.પાયલ ચૌધરી
આશ્વાસન ઇનામ- કુ.દિશા ચૌહાણ

તા.૨૦/૮/૨૦૧૮ દિને ઉધના એકેડેમી એજ્યુકેશન ટ્રસ્ટ સંચાલિત,કોમર્સ,બીબીએ,બીસીએ કોલેજ,સુરતમાં સર્જનાત્મક અભિવ્યક્તિ ધારા હેઠળ યોજાયેલ વક્તૃત્વ સ્પર્ધાનું પરિણામ નીચે મુજબ રહ્યું હતું.

પ્રથમ:- ઉપાધ્યાય અંકિત(એસ.વાય.બીકોમ સેમ:-૩)
દ્વિતીય:- તિવારી અભિષેક(ટી.વાય.બીબીએ સેમ:-૫)
તૃતીય:- પટેલ જીનલ (એસ.વાય.બીસીએ સેમ:-૩)

આ કાર્યક્રમના આયોજનમાં તમામ સ્ટાફમિત્રોએ સહકાર આપ્યો હતો. કાર્યક્રમનું સંચાલન આચાર્યશ્રી ડૉ.મેહુલ દેસાઈના માર્ગદર્શન હેઠળ સર્જનાત્મક અભિવ્યક્તિ ધારા સમિતિના સભ્યો દ્વારા કરવામાં આવ્યું હતું.

શ્રી ઉત્તર ગુજરાત બી.બી.એ એન્ડ બી.સી.એ કોલેજ સુરતમાં તા.૨૪ અને ૨૫-૮-૨૦૧૮ના રોજ impresario - 2018 સ્પર્ધાનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. જેમાં વિદ્યાર્થીઓએ ભાગ લીધો હતો.કોલેજ પરિવાર તરફથી પ્રાપ્ત થયેલ સહયોગના લીધે સ્પર્ધા સફળતાપૂર્વક સંપન્ન થઈ હતી.

શ્રી ઉત્તર ગુજરાત બી.બી.એ એન્ડ બી.સી.એ કોલેજ સુરતમાં તા ૭ અને ૮-૯-૨૦૧૮ ના રોજ સ્પર્ધાનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું.જેમાં વિધાર્થીઓએ ભાગ લીધો હતો. કોલેજના ટ્રસ્ટીશ્રીઓ અધ્યાપકો અને કોલેજ પરિવારના સહયોગથી કાર્યક્રમ સફળ રીતે સંપન્ન થયો હતો.

(૧) એ.વી.પટેલ કોમર્સ કોલેજની સ્ટુડન્ટ કાઉન્સિલની " સંસ્કૃતિક કમિટી'' અને ગુજરાતની રાજ્યની સપ્તધારા પ્રવૃત્તિની " ગીતસંગીત અને નૃતીયધારા" હેઠળ વર્ષાગીત સ્પર્ધાનો કાર્યક્રમ યોજાયો હતો. કાર્યક્રમની શરૂઆત પાર્થનાથી થઈ હતી આ સ્પર્ધામાં ૧૯ સ્પર્ધકોએ ભાગ લીધો હતો. જેમાં હિન્દી તથા ગુજરાતી ફિલ્મી-ગૈરફિલ્મી ગીતો સ્પર્ધકોએ રજુ કર્યા હતા. જેમાં પ્રથમ ક્રમે મિશ્રા શ્વેતા એસ., એફ.વાય.,બીકોમ, દ્રિતીય ક્રમેં ગુજરીયા રીકુકૌર પી., એસ. વાય. બીકોમ અને તૃતીય ક્રમે રેવર પુષ્પા કે., એફ.વાય. બીકોમ રહ્યા હતા. સ્પર્ધાના નિર્ણાયક તરીકે પ્રા. યોગેશભાઈ દેસાઈ અને પ્રા. નરેન્દ્રભાઈ સોલંકીએ સેવા આપી હતી. કોલેજના ઇન્ચાર્જ આચાર્યશ્રી વર્ષાબેન ટી.રાણાએ વિજેતા તેમજ તમામ સ્પર્ધકોને અભિનંદન પાઠવી તેમનો ઉત્સાહ વધાર્યો હતો. પ્રા.દિપીકાબેન લાડે કાર્યક્રમના સંચાલનનો દોર સંભાળ્યો હતો. કાર્યક્રમ દરમિયાન કોલજન શૈક્ષણિક તથા બિન- શૈક્ષણિક સ્ટાફ તથા વિદ્યાર્થીઓનો સુંદર સહકાર મળ્યો હતો.

(૨) એ.વી.પટેલ કોમર્સ કોલેજમાં ગુજરાત રાજ્યની સ્પ્તધારા પ્રવૃત્તિ હેઠળ " સર્જનાત્મક અભીવ્યક્તીધારા હેઠળ રાખી મેકિંગ સ્પર્ધાનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. જેમાં વિદ્યાર્થીઓએ ઉત્સાહભેર ભાગ લીધો હતો વિદ્યાર્થીઓએ ફૂલ,પાંદડી, ડાયમંડની સેર, લેસ, ઉન, રેશમના દોરા, મોતિ, કાગળ ની પટ્ટી, લવિંગ, સોપાનો, સ્ટોન, ટીલડી,ચોખ,કકું વગેરેનો ઉપયોગ કરી સુંદર રાખડીઓ તૈયારી કરી ભાઈ-બહેનનાં પવિત્ર સબંધને સુંદર સ્વરૂપ આપ્યું હતું. આ સ્પર્ધામાં પ્રથમક્રમે ગુજ્જર ભાવિની પી.,ટી.વાય. બીકોમ, દ્રિતીય ક્રમે પટેલ જાનકી એસ., ટી.વાય.બીકોમ અને તૃતીય ક્રમે લાડ અનુષ્કા જી., એફ.વાય.બીકોમ (અંગ્રેજી માધ્યમ) રહ્યા હતા. ઇન્ચાર્જ આચાર્યાશ્રી વર્ષાબેન ટી. રાણાએ વિજેતા તેમજ તમામ સ્પર્ધાકોને અભિનંદન પાઠવી પ્રોત્સાહિત કર્યા હતા. આ સ્પર્ધાનું આયોજન અને સંચાલન પ્રા. નિશાબેન ચાવડાએ નિર્ણાયક તરીકેની મહત્વની ભૂમિકા ભજવી હતી. કાર્યક્રમ દરમ્યાન કોલેજના શૈક્ષણિક તથા બિન – શૈક્ષણિક સ્ટાફ તથા વિદ્યાર્થીઓનો સુંદર સહકાર મળ્યો હતો.

વ્યાખ્યાન

એ.વી.પટેલ કોમર્સ કોલેજમાં ઉદિશા કલબના નેજા હેઠળ સેમિનારનું આયોજન થયું હતું. જે અંતર્ગત બેંકિંગ એકેડેમીના ડાયરેકટ શ્રી ચેતનભાઈ ભીમાણીએ વિદ્યાર્થીઓને વિવિધ સ્પર્ધાત્મક પરીક્ષાઓ અંગેનું માર્ગદર્શન આપ્યું હતું. વધુમાં તેમણે વિવિધ પરીક્ષા સંબંધી અભ્યાસક્રમની બુકલેટ વહેંચી હતી. કોલેજના ઇન્ચાર્જ આચાર્યા શ્રીમતી વર્ષાબેન રાણાએ પુષ્પ વડે મહેમાનોનું સ્વાગત કર્યું હતું. આ સેમિનારમાં તમામ વિદ્યાર્થીઓએ ઉત્સાહભેર ભાગ લીધો હતો. પ્રા.દીપિકાબેન લાડે કાર્યક્રમના સંચાલનનો દોર સાંભળ્યો હતો અને આભારવિધિ કરી હતી. કાર્યક્રમ દરમ્યાન કોલેજના શૈક્ષાણિક તથા બિન – શૈક્ષાણિક સ્ટાફ તથા વિદ્યાર્થીઓનો સુંદર સહકાર મળ્યો હતો.

(૧) એ.વી.પટેલ કોમર્સ કોલેજમાં તજજ્ઞ ગુજરાત સરકાર અને કે.સી.જી. પ્રેરિત ઉદિશા ક્લબ ના ઉપક્રમે કારકિર્દી માર્ગદર્શન કાર્યક્રમ યોજાયો હતો.જેમાં તજ્જ્ઞ વક્તાઓ તરીકે એરોસ્ટારજેટ ટ્રેનિંગ એકેડેમી પ્રા લિ.સેન્ટરના કોઓડિનેટર શ્રી દીપકુમાર ઠક્કર અને શ્રી મુકેશભાઇ શર્માએ ટી.વાય.બીકોમ તથા એસ.વાય.બીકોમના વિધાર્થીઓને "એવિએશન, હોસ્પીટાલિટી અને ટુર્સ-ટ્રાવેલ્સ ક્ષેત્રે કારકીર્દી / રોજગારી માટેના વિવિધ અભ્યાસક્રમો વિષય પર નિદર્શન દ્વારા વિસ્તૃત માહિતી –માર્ગદર્શન પૂરા પાડ્યા હતા. અંતમાં વિધ્યાર્થી ઓએ પ્રશ્નોત્તરીમાં સક્રિય ભાગ લીધો હતો . કોલેજના ઇન્ચાર્જ આચાર્ય શ્રીમતી વર્ષાબેન રાણાએ પુષ્પો વડે મહેમાનોનું સ્વાગત કર્યું હતું . મહેમાનોનો પરિચય તેમજ આભરવિધિ પ્રા .વાય.જે.દેસાઈએ કરી હતી. કાર્યક્રમ દરમ્યાન

કોલેજના શૈક્ષણિક તથા બિન–શૈક્ષણિક સ્ટાફ તથા વિધાર્થીઓનું સુંદર સહકાર મળ્યો હતો.

(2) એ. વી . પટેલ કોમર્સ કોલેજમાં ગુજરાત સરકાર અને કે.સી. જી પ્રેરિત ઉદિશા કલબના ઉપક્રમે કારકીર્દી માર્ગદર્શન કાર્યક્રમ યોજાયો હતો. જે અંતર્ગત ''Chips & Bytes institute Vapi '' સેંટર હેડશ્રી આશિષ પારેખ '' Tally ERP9 પાવર પોઈન્ટ પ્રેઝેંટેશન દ્વારા વિધાર્થીઓને સમજૂતી આપી હતી તથા ધર્મિનભાઈ પટેલે સ્પર્ધાત્મક પરીક્ષાઓની તૈયારી કઈ રીતે કરવી ? તે અંગે માર્ગદર્શન આપ્યું હતું. કોલેજ ના ઇન્ચાર્જ શ્રીમતિ વર્ષાબેન રાણાએ પુષ્પો વડે મહેમાનનું સ્વાગત કર્યું હતું. આ સેમિનારમાં કોલેજના તમામ વિધાર્થી ઓએ ભાગ લીધો હતો. અંતમાં વિધાર્થીઓએ પ્રશ્નતરીમાં સક્રિય ભાગ લીધો હતો. જેમાં સાચા જવાબ આપનાર વિધાર્થી ઓને ઈનામ આપી પ્રોત્સાહિત કરાયા હતા.આ ઉપરાંત લેખિત ટેસ્ટ પણ લેવામાં આવી હતીજેમાં પ્રથમ ત્રણ વિજેતાઓને ટ્રોફી આપી પ્રોત્સાહિત કરાય હતા. પ્રો. દીપિકાબેન લાડે કાર્યક્રમના સંચાલનનો દોર સંભાર્યો હતો. કાર્યક્રમ દરમ્યાન કોલેજના શૈક્ષણિક તથા બિન- શૈક્ષણિક સ્ટાફ તથા વિધાર્થી ઓનો સુંદર સહકાર મળ્યો હતો.

વિજ્ઞાનના આયામો સત્ય-પ્રમાણ-પ્રયોગો-ઉદાહરણ સાબિતી આદી જયારે આપણા યોજના-સમસ્યા કે ઘટનામાં વૈચારિક મિજાજ બને ત્યારે જીવનની સમૃધ્ધિના દ્વારા ખુલી જાય છે. સાયકાત્રિક થીકિંગ કરતા સાયન્ટીફિક થીકિંગ જુદું અને ફાયદાકારક છે. આ અણમોલ સત્યોને સમજાવતું “વૈજ્ઞાનિક વિચારધારા” પર ઉપરોક્ત સત્યને પ્રગટ કરતું એક ઉત્કૃષ્ટ વ્યાખ્યાન પ્રા.એન.એન. રાઘોલિયા દ્વારા રસાયણ વિભાગ બી.કે.એમ. સાયન્સ કોલેજ,વલસાડ ઉપક્રમે યો.જી. અને પી.જી. ના વિદ્યાર્થીઓ માટે યોજાયું હતું. વ્યાખ્યાન સભાના અતિથિ વિશેષ તરીકે શ્રી જીતુભાઈ દેસાઈ તેમજ પ્રમુખ તરીકે આચાર્યશ્રી ડૉ.વિકાસભાઈ દેસાઈ એ સ્થાન બીરજ્યું હતું.

વિદ્યાર્થી પ્રતિનિધિમંડળ

ભગવાન મહાવીર કોલેજ ઓફ એજ્યુકેશન,ભરથાણામાં વિધાર્થી પ્રતિનિધિ મંડળની રચના કરવામાં આવી. જેમાં સામાન્ય મંત્રી તરીકે મુલતાની આબિદ,મહિલા પ્રતિનિધિ મંત્રી તરીકે ભરૂચી જલ્યા, સંસ્કૃતિક સમિતિના મંત્રી તરીકે પાટીલ આકાંક્ષા, નાણા સમિતિમાં મંત્રી તરીકે વસાવા રાહુલ, જીમખાના સમિતિના મંત્રી તરીકે પારમાર મનદીપ, પ્રાર્થના સમિતિના મંત્રી તરીકે પટેલ યામિનિ, પ્રવાસ સમિતિના મંત્રી તરીકે દેસાઈ આયુષી, સામાયિક સમિતિના મંત્રી તરીકે વળવી પ્રેસિત, પ્લાનીગ સમિતિના મંત્રી તરીકે રિદ્ધી જોષી મંત્રી બુલેટીન સમિતિના મંત્રી ચોકસી ફરહીન નિમણુંક પામ્યા હતા

સન્માન સમારંભ

ભગવાન મહાવીર કોલેજ ઓફ એજ્યુકેશન,ભરથાણામાં વિદ્યાર્થી પ્રતિનિધિનો સન્માન સમારભ કરવામાં આવ્યો. કાર્યક્રમમાં મુખ્ય અધ્યક્ષ તરીકે સંસ્થાનાં પરચેઝ ડાયરેક્ટ ડૉ. વી. પી. ભાટીયા ઉપસ્થિત રહયા હતા. કાર્યક્રમ ની શરૂઆત પ્રાર્થના દ્વારા કરવામાં આવી હતી.આચાર્યાશ્રી ડૉ.કે.વી. દેસાઈએ પુષ્પ ગુચ્છ આપી અધ્યક્ષશ્રીનું સન્માન કર્યું હતું. વિદ્યાર્થી પ્રતિનિધિ મંડળની રચનાનો વિગતવાર અહેવાલ પ્રો. ડૉ. પાયલબેન પટેલે આપ્યો હતો. ત્યાર બાદ પ્રો.દેવાંગનાબેન પટેલે વિદ્યાર્થી ઓં પાસે પ્રતિજ્ઞા લેવડાવી પ્રતિનિધિ મંડળનું સન્માન કરવામાં આવ્યું હતું.કાર્યક્રમના અંતમાં અધ્યક્ષશ્રીએ આર્શીવચનો પાઠવ્યા હતા. કાર્યક્રમનું સંચાલન તાલિમાર્થી ગામિત વિશાખા અને પટેલ ચૈતાલી તેમજ આભાર વિધિ પટેલ યામિનીએ કરી હતી.

ઊજવણી

નવસારી જિલ્લાનો સ્વાતંત્ર્યદિન ઉજવણી ધ્વજવંદન કાર્યક્રમ ટ્રસ્ટ બીલીમોરા વિભાગ કેરાવણી મંડળ સંચાલિત શૈક્ષાણિક સંસ્થાઓના કેપાસના મેદાનમાં યોજાયો હતો. ગુજરાત રાજ્યના અરોગ્યામંત્રીશ્રી કિશોરભાઈ કનાળીએ ત્રિરંગો લહેરાવી સલામી આપી હતી. ત્યારબાદ તેમણે પોલીસ પરેડનું નિરીક્ષણ કરી, સ્વાતંત્ર્યસેનાની શ્રી દિનકરભાઈ દેસાઈનું શાલ ઓઢાડી સન્માન કર્યું હતું. મંત્રીશ્રીએ પોતાના પ્રવચનમાં આઝાદીનું મહત્વ અને આજના સમયમાં નાગરીકોની સમાજ અને દેશ પ્રત્યેની ફરજો અને જવાબદારી વિશે મનનીય પ્રવચન આપ્યું હતું. આ કાર્યક્રમ અંતર્ગત યોજાયેલ સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમમાં નવસારી જિલ્લાની વિવિધ શૈક્ષણિક સંસ્થાઓએ પોતાની કૃતિઓ સુંદર રજૂઆત કરી ભારતીય વિવિધતામાં એકતાનું પ્રદર્શન કરી સૌને ગદગદિત કર્યા હતા.

વાર્તાલાપ

એ.વી.પટેલ કોમર્સ કોલેજ બીલીમોરાના ગ્રંથાલય અને માહિતી વિભાગના ઉપક્રમે "મને ગમતું પુસ્તક વાર્તાલાપ" યોજવામાં આવ્યો હતો. નોલેજ સોસાયટીના યુગમાં પુસ્તકો આપણા સાચા રાહબર બની શકે છે. માનવીની વિચાર ક્ષિતિજોને વિસ્તારે છે. ભારતીય સંસ્કૃતિ અનુસાર પ્રાર્થનાથી શરૂ થયેલા આ કાર્યક્રમમાં ૭ વિદ્યાર્થીઓ અને એક અધ્યાપિકાએ ગુજરાતી સાહિત્યના જુદા જુદા લેખકોના જુદા જુદા પુસ્તકો પર પોતાના વિચારો રજુ કર્યા હતા. કોલેજના ઇન્ચાર્જ આચાર્યાશ્રી વર્ષાબેન ટી. રાણાનાં માર્ગદર્શન હેઠળ થયેલ આ કાર્યક્રમમાં વિદ્યાર્થીઓએ ઉત્સાહપૂર્વક ભાગ લીધો હતો. કોલેજના અધ્યાપકોએ કાર્યક્રમમાં હાજરી આપી વિદ્યાર્થીઓમાં વાંચનની અભિરૂચી કેળવાય તે માટે પ્રોત્સાહિત કર્યા હતા. વાર્તાલાપનું સંચાલન અને આભારવિધિ ગ્રંથપાલશ્રી આર.એમ.પટેલ કરી હતી.

એ.વી. પટેલ કોમર્સ કોલેજ બીલીમોરાના ગ્રંથાલય અને માહિતી વિભાગના ઉપક્રમે તા.૨૬-૭-૨૦૧૮ના રોજ મને ગમતું પુસ્તક વાર્તાલાપ યોજવામાં આવ્યા હતા. પુસ્તકનો સંગ એટલા માટે શ્રેષ્ઠ છે કે માણસના એકાંતનો એક માત્ર એ ઇસ્ટમિત્ર છે. વાંચન માનવીના સમગ જીવનમાં પ્રેરણા, પ્રસન્નતા અને પ્રોત્સાહને પૂરું પાડે છે. ભારતીય સંસ્કૃતિ અનુસાર પ્રાર્થનાથી શરૂ થયેલા આ કાર્યક્રમમાં ૮ વિદ્યાર્થીઓ અને એક અધ્યાપિકાએ ગુજરાતી સાહિત્યના જુદા જુદા લેખકોના જુદા જુદા પુસ્તકો પર પોતાના વિચારો રજૂ કર્યા હતા. કોલેજના ઇન્ચાર્જ આચાર્યશ્રી વર્ષાબેન ટી. રાણાના માર્ગદર્શન હેઠળ થયેલા આ કાર્યક્રમમાં વિદ્યાર્થીઓએ ઉત્સાહપૂર્વક ભાગ લીધો હતો. વાર્તાલાપનું સચાલન અને આભરવિધિ ગ્રંથપાલશ્રી આર.એમ.પટેલે કરી હતી.

Seminar

A Seminar presented by Dr.Sameer Upadhyay of Surat on 9th August 2018, was organized by C.N. Kothari Homoeopathic Medical College & Research Center, Vyara in association with Homoeopathic Medical Association of India (HMAI), Vyara Unit .The topic was "Understanding core of the Patient." He presented many cases wherein the treatment was based on some peculiar symptoms which qualified the Individual patient. It was based on some peculiar symptoms which qualified the Individual Patient. It was a fruitful seminar to both students & staff. The whole event was managed by Dr. Varsha Burad seminar incharge & team under the direction of the Principal of the College, Dr.Mrs.J.R.Rao.

રાષ્ટ્રીય સેવા યોજના

તા. ૧૩-૮-૨૦૧૮ના રોજ બીલીમોરા વિભાગ કેળવણી મંડળ સંચાલિત વિવિધ સંસ્થાઓનો સંયુક્ત રકતદાન શિબિર કે.બી.પટેલ સ્કુલ હોલમાં યોજાયેલી હતી. જેમાં એ.વી.પટેલ કોમર્સ કોલેજ બીલીમોરા વિભાગ કેળવણી મંડળ સંચાલિત વિવિધ સંસ્થાઓનો સયુંકત રકતદાન શિબિર કે.બી.પટેલ સ્કુલ હોલમાં યોજાયી હતી. જેમાં એ.વી.પટેલ કોમર્સ કોલેજ બીલીમોરાના ૩૩ વિદ્યાર્થીઓએ રકતદાન કર્યું હતું. તેમજ ૫૮ જેટલા વિદ્યાર્થીઓએ ઉત્સાહભેર ભાગ લીધો હતો.

'દક્ષિણાયન': સરનામુ

e-mail:
dakshinayanlibrary.vnsgu@gmail.com

Chief Editor: Dr.K.C. Poria, Professor (Stage-6) and Head, Department of Physics, VNSGU, Surat.

Editor: Dr. B.J. Ankuya, Assistant Librarian, VNSGU, Surat.

Published by: Shri A.V.Dhaduk, I/c. Registrar, VNSGU, Surat.

Designed by: Shri Mayaankkumar Patel, Programmer, VNSGU, Surat.

THIS e-NEWSLETTER IS ALSO AVAILABLE ON THE LIBRARY AT WEBSITE www.vnsgulibrary.org

Tel: + 91-261-2227141 Fax: + 91-261-2227312

E-mail: dakshinayanlibrary.vnsgu@gmail.com